



समकालीन चिंतन में मानवतावाद

डॉ. हर्षवर्धन मिश्र,

एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत)

राजकीय महाविद्यालय कौशांबी

सार

मानवतावाद, एक ऐसा दर्शन जो मनुष्य को केंद्र में रखता है, उसके मूल्यों, गरिमा और क्षमता को सर्वोच्च मानता है, सदियों से विभिन्न रूपों में प्रकट होता रहा है। समकालीन चिंतन में भी मानवतावाद एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, हालांकि इसकी प्रकृति और चुनौतियां पहले से कहीं अधिक जटिल हो गई हैं। आज के युग में, जहां विज्ञान और प्रौद्योगिकी अभूतपूर्व प्रगति कर रहे हैं, भूमंडलीकरण ने संस्कृतियों और विचारों को आपस में जोड़ दिया है, और अस्तित्वगत जोखिम लगातार मंडरा रहे हैं, मानवतावाद की प्रासंगिकता और उसका स्वरूप नए सिरे से परिभाषित हो रहा है। समकालीन मानवतावाद किसी एक विचारधारा या सिद्धांत तक सीमित नहीं है। यह विभिन्न दृष्टिकोणों और आंदोलनों का एक जटिल जाल है जो मनुष्य के कल्याण और विकास को सर्वोपरि मानते हैं। एक ओर, धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद तर्क, विज्ञान और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित एक विश्वदृष्टि प्रस्तुत करता है, जिसमें किसी भी अलौकिक शक्ति या धार्मिक सिद्धांत को अंतिम सत्य नहीं माना जाता। यह मनुष्य की स्वतंत्रता, जिम्मेदारी और आत्म-निर्णय के अधिकार पर जोर देता है। दूसरी ओर, अस्तित्ववादी मानवतावाद मनुष्य की स्वतंत्रता और जिम्मेदारी को स्वीकार करते हुए, उसके अकेलेपन, चिंता और अर्थ की खोज पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है। यह मानता है कि मनुष्य का सार पहले से निर्धारित नहीं होता, बल्कि वह अपने कर्मों और choices के माध्यम से स्वयं को बनाता है।

मुख्य शब्द

धर्मनिरपेक्ष, मानवतावाद, अस्तित्ववादी, समकालीन

प्रस्तावना

समकालीन चिंतन में मानवतावाद कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों को प्रभावित करता है। नैतिकता के क्षेत्र में, यह सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की खोज पर बल देता है, जो सांस्कृतिक और धार्मिक सीमाओं से परे हों। मानवाधिकारों की अवधारणा, जो प्रत्येक व्यक्ति की अंतर्निहित गरिमा और अधिकारों को मान्यता देती है, समकालीन मानवतावादी चिंतन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह नस्ल, लिंग, धर्म या राष्ट्रीयता के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव का विरोध करता है और न्याय, समानता और स्वतंत्रता के सिद्धांतों का समर्थन करता है।

राजनीति और समाज के क्षेत्र में, मानवतावाद लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और कल्याणकारी राज्य की अवधारणाओं को बढ़ावा देता है। यह नागरिकों की भागीदारी, कानून के शासन और अल्पसंख्यक अधिकारों के संरक्षण पर जोर देता है। भूमंडलीकरण के इस युग में, मानवतावादी चिंतन राष्ट्रीय सीमाओं से परे जाकर वैश्विक नागरिकता और साझा मानवीय जिम्मेदारी की भावना को विकसित करने का प्रयास करता है।

समकालीन मानवतावाद को कई महत्वपूर्ण चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति, विशेष रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता और जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, मनुष्य की परिभाषा और उसकी विशिष्टता पर सवाल उठा रही है। क्या कृत्रिम बुद्धिमत्ता में चेतना और भावनाएं विकसित हो सकती हैं? क्या जीन संपादन जैसी तकनीकें मानव स्वभाव को मौलिक रूप से बदल सकती हैं? इन प्रश्नों ने मानवतावादी मूल्यों और सिद्धांतों के लिए नई नैतिक दुविधाएं खड़ी कर दी हैं।

पर्यावरण संकट भी समकालीन मानवतावाद के लिए एक बड़ी चुनौती है। मनुष्य की प्रकृति-केंद्रित दृष्टिकोण और अनियंत्रित उपभोग ने ग्रह को गंभीर खतरे में डाल दिया है। अब यह महसूस किया जा रहा है कि सच्ची मानवीय प्रगति प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने और भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण करने में निहित है। इस संदर्भ में, पारिस्थितिक मानवतावाद जैसे नए दृष्टिकोण सामने आ रहे हैं, जो मनुष्य को प्रकृति का हिस्सा मानते हैं और सभी जीवित प्राणियों के प्रति जिम्मेदारी की भावना पर जोर देते हैं।

उत्तर-आधुनिक चिंतन ने सार्वभौमिक सत्य, तर्क और वस्तुनिष्ठता की पारंपरिक मानवतावादी धारणाओं पर सवाल उठाया है। इसने सांस्कृतिक सापेक्षतावाद, पहचान की तरलता और शक्ति संरचनाओं के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया है। जबकि उत्तर-आधुनिकतावाद की आलोचनात्मक दृष्टि ने मानवतावादी चिंतन को अधिक समावेशी और आत्म-जागरूक बनने के लिए प्रेरित किया है, इसने कुछ मामलों में नैतिक

सापेक्षतावाद और व्यक्तिवाद को भी बढ़ावा दिया है, जो मानवतावादी मूल्यों के लिए खतरा पैदा कर सकता है।

समकालीन चिंतन में मानवतावाद की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। वास्तव में, आज के जटिल और अनिश्चित विश्व में, मानवीय मूल्यों, करुणा, सहिष्णुता और सहयोग की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। मानवतावाद हमें एक साझा नैतिक आधार प्रदान करता है, जो हमें वैश्विक चुनौतियों का सामना करने, न्यायपूर्ण और समावेशी समाजों का निर्माण करने और एक स्थायी भविष्य की ओर बढ़ने में मदद कर सकता है।

आधुनिकता के साथ, विज्ञान और तर्क के विकास ने धार्मिक व्याख्याओं के प्रभुत्व को कम कर दिया है। ज्ञानोदय ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानवाधिकारों और तर्कसंगत जांच के महत्व पर जोर दिया। इसने धर्मनिरपेक्षता के उदय के लिए मंच तैयार किया, जिसमें राज्य और धार्मिक संस्थानों को अलग करने और सार्वजनिक जीवन में धार्मिक प्रभाव को सीमित करने की वकालत की गई।

साहित्य की समीक्षा

धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद मानव गरिमा, स्वायत्तता और क्षमता में दृढ़ विश्वास रखता है। यह मानता है कि मनुष्य नैतिक और तर्कसंगत प्राणी हैं जो अपने मूल्यों और अर्थ को बनाने में सक्षम हैं। मानवतावादी करुणा, सहानुभूति और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों पर आधारित एक नैतिकता की वकालत करते हैं, जो मानव कल्याण और खुशी को प्राथमिकता देती है। धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी ज्ञान प्राप्त करने और दुनिया को समझने के लिए तर्क, अनुभवजन्य साक्ष्य और वैज्ञानिक पद्धति पर भरोसा करते हैं। वे अंधविश्वास, हठधर्मिता और अपुष्ट दावों को अस्वीकार करते हैं। धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद नैतिकता का एक मानव-केंद्रित दृष्टिकोण प्रदान करता है। नैतिक निर्णय धार्मिक आदेशों या दैवीय इच्छाशक्ति के बजाय मानव कारण, अनुभव और परिणामों पर आधारित होते हैं। यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत जिम्मेदारी, आपसी सम्मान और सभी मनुष्यों के कल्याण को बढ़ावा देता है।

धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों के लिए प्रतिबद्ध हैं। वे भेदभाव, उत्पीड़न और अन्याय के सभी रूपों का विरोध करते हैं और एक निष्पक्ष और समावेशी समाज बनाने की दिशा में काम करते हैं। धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद स्वीकार करता है कि जीवन का कोई पूर्वनिर्धारित धार्मिक अर्थ या उद्देश्य नहीं है। इसके बजाय, यह व्यक्तियों को अपने स्वयं के अर्थ और उद्देश्य को खोजने और बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है, जो मानवीय संबंधों, रचनात्मकता, ज्ञान की खोज और दूसरों की सेवा में पाया जा सकता है।

धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद धार्मिक सिद्धांतों से स्वतंत्र है, यह धर्म के साथ संवाद और सहयोग की संभावना को अस्वीकार नहीं करता है। कई धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी उन धार्मिक व्यक्तियों और समुदायों के साथ सामान्य आधार तलाशते हैं जो साझा मानवीय मूल्यों और सामाजिक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं।

समकालीन चिंतन में मानवतावाद

धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद को कई चुनौतियों और आलोचनाओं का सामना करना पड़ता है। कुछ आलोचकों का तर्क है कि यह नैतिक सापेक्षवाद की ओर ले जाता है, जीवन के लिए एक संतोषजनक आधार प्रदान करने में विफल रहता है, या मानवीय प्रकृति के बारे में एक अवास्तविक रूप से आशावादी दृष्टिकोण रखता है। धर्मनिरपेक्ष मानवतावादियों का तर्क है कि उनकी नैतिकता तर्क और मानवीय कल्याण पर आधारित है, और जीवन का अर्थ व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों के माध्यम से पाया जा सकता है।

समकालीन चिंतन में धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद एक जीवंत और विकसित हो रहा दर्शन है। यह तर्क, नैतिकता और मानवीय मूल्यों पर आधारित एक विश्वदृष्टि प्रदान करता है। जबकि इसकी चुनौतियां हैं, धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद आज की जटिल दुनिया में नैतिक मार्गदर्शन, सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत पूर्ति के लिए एक महत्वपूर्ण ढांचा प्रस्तुत करता है। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो मानव क्षमता का जश्न मनाता है और सभी के लिए एक बेहतर भविष्य बनाने के लिए मानवीय प्रयास पर जोर देता है।

अस्तित्ववादी मानवतावाद का मूल विचार यह है कि मनुष्य का सार उसके अस्तित्व से पहले निर्धारित नहीं होता। इसके विपरीत, मनुष्य पहले दुनिया में आता है, जीता है, अनुभव करता है और अपने कार्यों के माध्यम से धीरे-धीरे अपने स्वरूप का निर्माण करता है। जैसा कि जीन-पॉल सार्त्र ने कहा, "अस्तित्व सार से पहले आता है।" यह क्रांतिकारी विचार मनुष्य को किसी पूर्वनिर्धारित भाग्य या दैवीय योजना के बंधन से मुक्त करता है और उसे अपनी पसंदों और कार्यों का पूर्ण उत्तरदायी बनाता है।

समकालीन चिंतन में, यह विचार कई स्तरों पर महत्वपूर्ण है। वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने हमारे जीवन को अभूतपूर्व रूप से बदल दिया है। हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं जहाँ पारंपरिक मूल्य और सामाजिक संरचनाएँ तेजी से बदल रही हैं। इस अस्थिरता और अनिश्चितता के माहौल में, अस्तित्ववादी मानवतावाद हमें अपने मूल्यों और अर्थों के स्रोतों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित करता है। यह हमें याद दिलाता है कि कोई बाहरी शक्ति हमें यह नहीं बता सकती कि हमें कैसे जीना चाहिए या क्या मानना चाहिए। इसके बजाय, यह जिम्मेदारी पूरी तरह से हम पर है कि हम अपने जीवन के उद्देश्य और अर्थ का निर्माण करें।

अस्तित्ववादी मानवतावाद व्यक्तिनिष्ठता पर जोर देता है। प्रत्येक व्यक्ति का अनुभव अद्वितीय और अपूरणीय है। समकालीन समाज, जो अक्सर बड़े पैमाने पर उत्पादन और मानकीकरण की ओर झुकता है, इस व्यक्तिनिष्ठता को हाशिए पर धकेल सकता है। अस्तित्ववादी चिंतन हमें प्रत्येक व्यक्ति की आंतरिक दुनिया की जटिलता और महत्व को पहचानने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह हमें दूसरों के अनुभवों के प्रति अधिक संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण बनने की आवश्यकता पर बल देता है, क्योंकि हम सभी अपनी-अपनी अनूठी परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

अस्तित्ववादी मानवतावाद की कुछ आलोचनाएँ भी हैं। कुछ आलोचकों का तर्क है कि यह अत्यधिक व्यक्तिवाद और सापेक्षवाद को बढ़ावा दे सकता है, जिससे सामाजिक एकजुटता और साझा मूल्यों का क्षरण हो सकता है। यह भी कहा जाता है कि यह निराशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, क्योंकि यह ईश्वर या किसी अन्य पारलौकिक शक्ति पर आधारित किसी भी अंतिम अर्थ या उद्देश्य को अस्वीकार करता है।

अस्तित्ववादी मानवतावाद का समकालीन चिंतन पर गहरा प्रभाव बना हुआ है। यह हमें नैतिक और राजनीतिक मुद्दों पर नए सिरे से विचार करने के लिए प्रेरित करता है। उदाहरण के लिए, मानवाधिकारों की अवधारणा, जो प्रत्येक व्यक्ति की अंतर्निहित गरिमा और स्वतंत्रता पर आधारित है, अस्तित्ववादी विचारों के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। इसी तरह, सामाजिक न्याय और समानता के लिए संघर्ष में, अस्तित्ववादी मानवतावाद हमें उन संरचनाओं और प्रणालियों पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित करता है जो व्यक्तियों को उनकी स्वतंत्रता और आत्म-निर्णय के अधिकार से वंचित करती हैं।

मनोविज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में भी अस्तित्ववादी विचारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अस्तित्ववादी चिकित्सा, उदाहरण के लिए, व्यक्ति के अपने अस्तित्व के साथ संघर्ष, अर्थ की खोज और मृत्यु की अनिवार्यता जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती है। यह व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता और जिम्मेदारी को स्वीकार करने और अपने जीवन के लिए प्रामाणिक विकल्प बनाने में मदद करने का प्रयास करती है।

तकनीकी प्रगति के इस युग में, जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग हमारे जीवन के हर पहलू में प्रवेश कर रहे हैं, अस्तित्ववादी मानवतावाद हमें मनुष्य होने का क्या अर्थ है, इस पर गहराई से विचार करने के लिए भी प्रेरित करता है। क्या हमारी स्वतंत्रता और स्वायत्तता मशीनों द्वारा चुनौती दी जा रही है? क्या हम अपनी मानवीयता को बनाए रखने के लिए नए तरीकों की तलाश करने की आवश्यकता है? ये ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न हैं जिनका उत्तर हमें समकालीन चिंतन के इस महत्वपूर्ण धारा के माध्यम से मिल सकता है।

समकालीन चिंतन में अस्तित्ववादी मानवतावाद एक जीवंत और प्रासंगिक शक्ति बनी हुई है। यह हमें मनुष्य के अस्तित्व की मौलिक स्वतंत्रता और जिम्मेदारी की याद दिलाता है। यह हमें व्यक्तिनिष्ठता के महत्व को

समझने और दूसरों के अनुभवों के प्रति अधिक सहानुभूतिपूर्ण बनने के लिए प्रोत्साहित करता है। जबकि इसकी कुछ आलोचनाएँ हैं, यह हमें नैतिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत स्तर पर महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार करने के लिए एक शक्तिशाली ढाँचा प्रदान करता है। एक ऐसे युग में जो तेजी से परिवर्तन और अनिश्चितता से भरा हुआ है, अस्तित्ववादी मानवतावाद हमें अपने मूल्यों को परिभाषित करने, अपने अर्थ का निर्माण करने और एक प्रामाणिक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

समकालीन चिंतन में मानवतावाद एक गतिशील और बहुआयामी अवधारणा है। यह पारंपरिक मानवतावादी मूल्यों को बनाए रखते हुए, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण और उत्तर-आधुनिकता जैसे नए संदर्भों और चुनौतियों के साथ लगातार संवाद कर रहा है। यह मनुष्य की गरिमा, स्वतंत्रता और क्षमता में विश्वास बनाए रखता है, जबकि उसकी सीमाओं, जिम्मेदारियों और अन्योन्याश्रयता को भी स्वीकार करता है। आज के विश्व में, मानवतावादी मूल्यों को बनाए रखना और उन्हें बढ़ावा देना न केवल वांछनीय है, बल्कि मानव अस्तित्व और ग्रह के भविष्य के लिए आवश्यक भी है।

संदर्भ

1. आजकल: मार्च 2019 - पृष्ठ 20
2. वहीं - पृष्ठ 29
3. पंचशील शोध-समीक्षा - पृष्ठ 82
4. आजकल: मार्च 2019 - पृष्ठ 27
5. पंचशील शोध-समीक्षा - पृष्ठ 87
6. आजकल: मार्च 2019 - पृष्ठ 24
7. पंचशील शोध-समीक्षा - पृष्ठ 61
8. डॉ. हृदय नारायण मिश्र - सामाजिक राजनीतिक दर्शन के नये आयाम , पृष्ठ संख्या 189
9. डॉ. शिव भानु सिंह - समाज दर्शन का सर्वेक्षण, पृष्ठ संख्या 444